प्रातःक्लास 4/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। भगवानुवाचः बच्चे जानते हैं कि बाप वही राजयोग सिखा रहे हैं जो 5000 वर्ष पहले सिखलाया था। बच्चों को मालूम है। दुनियां को तो मालूम नहीं। तो फिर पूछना चाहिए गीता का भगवान कब आया था? भगवान जो कहते हैं, मैं तुमको राजयोग सिखा कर राजाओं का राजा बनाता हूँ वह गीता का एपीसोड कब हुआ था? पूछना चाहिए ना। यह बात कोई भी नहीं जानते। तुम अभी प्रैक्टिकल में सुन रहे हो। गीता का एपीसोड होना भी चाहिए कलयुग अंत और सतयुग आदि के बीच में। आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करते हैं तो ज़रूर संगम पर ही आवेंगे। पुरुषोत्तम संगमयुग है ज़रूर। भल पुरुषोत्तम वर्ष गाते हैं; परन्तु बिचारों को पता नहीं है। तुम मीठे–2 बच्चों को मालूम है। उत्तम पुरुष बनने लिए अर्थात् मनुष्य को उत्तम देवता बनाने लिए बाप आकर पढ़ाते हैं। मनुष्यों में उत्तम पुरुष यह (ल.ना.) देवताएं ही हैं ना। मनुष्य से देवता किये....यह तो हुआ पुरुषोत्तम संगम। देवताएं तो ज़रूर सतयुग में ही आते हैं। बाकी सभी मनुष्य कलयुग में हैं। तुम बच्चे जानते हो हम हैं संगमयुगी ब्राह्मण। यह तो पक्का–2 याद करना है। नहीं तो कुल किसको भी भूलता नहीं है; परन्तु यहां माया यह भी भुला देती है। हम ब्राह्मण कुल के हैं फिर देवता कुल के बनते हैं। बहुतों को माया भुला देती है। अगर यह याद रहे तो चोटी भी याद रहे। खुशी रहे। तुम पढ़ते भी हो राजयोग। समझाते हो, अभी फिर से भगवान गीता का ज्ञान जिसको भारत का प्राचीन राजयोग कहा जाता है वह सुना रहे हैं। मनुष्य से देवत बना रहे हैं। बाप ने कहा काम महाशत्रु है, इन पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। कल कलकत्ते से समाचार आया पवित्रता (की) बात पर डिवेट करने लगे। बच्ची ने लिखा कैसे–2 मनुष्य मिलते हैं। मनुष्यों के लिए विकार तो जैसे खज़ाना। बाप से यह वर्सा मिला हुआ है। बालग बनते हैं तो पहले–2 यह वर्सा मिलता है बाप का। शादी बरबादी (क)राते हैं। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। तो ज़रूर काम को जीतने से ही जगत जीत बनेंगे। ज़रूर बाप संगम(यु)ग पर ही आए होंगे। महाभारत–महाभारी लड़ाई भी है। हम भी यहां हाज़िर हैं। ऐसे भी नहीं है सभी ..... से काम पर विजय पहन लेते हैं। नहीं देरी लगती है। मुख्य बात तो यह ही लिखते हैं कि बाबा (ह)म गिर गए। विषय सागर नदी में गिर गये तो ज़रूर कोई ऑर्डीनेन्स है ना। बाप का फरमान है काम को (जी)तने से जगतजीत बनेंगे। ऐसे नहीं कि जगतजीत बनकर फिर विकार में जाते होंगे। जगतजीत यह (ल.ना.) ..... हैं ना। इनको कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। देवताओं को सभी निर्विकारी ही कहते हैं। देवता (ध)र्म है ही निर्विकारी। जिसको तुम रामराज्य कहते हो। वह दुनियां ही है वायसलेस। यह है विषियस दुनियां। पवित्र गृहस्थ आश्रम। बाप ने समझाया है तुम पवित्र गृहस्थ आश्रम के थे। अभी 84 जन्म लेते–2 अपवित्र ..... हो। 84 जन्मों की (क)हानी है ना। नई दुनियां ज़रूर वायसलेस होना चाहिए। भगवान पवित्रता का सागर है। ..... स्थापना करते हैं। फिर रावण राज्य भी ज़रूर आना है। नाम ही है रामराज्य और रावण राज्य। रावण राज्य ..... आसुरी राज्य। अभी तुम आसुरी राज्य में बैठे हो। यह है दैवी राज्य की निशानी। बाबा ने कहा था ..... प्रभात फेरी निकालो। प्रभात फेरी सबेरे को कहा जाता है। उस समय तो मनुष्य सोये हुए रहते हैं; इसलिए देरी से निकालते हैं; क्योंकि मनुष्य काम विकार में थक–2 कर सो जाते हैं। थकावट इनमें होती न कि क्रोध में। प्रदर्शनी भी अच्छी तब हो जब सेन्टर भी हो, जहां जाकर समझें। भगवनुवाच काम महाशत्रु पर जीत पाने से तुम जगत जीत बनेंगे। यह ल.ना. का चित्र साथ में ज़रूर होना चाहिए। ट्रांसलाइट ..... भूलना न चाहिए। ट्रांसलाइट का चित्र हो सकता है। बैटरी आदि का प्रबन्ध रख सकते हैं। एक यह ..... सीढ़ी। ट्रक में जैसे पूजा में देवियों (को) निकालते हैं ना। तुम भी दो तीन ट्रक्स निकालो। जिसमें चित्र दिखाते और समझाते रहो। दिन–प्रतिदिन चित्रों की भी वृद्धि होती जाती है। तुम्हारा ज्ञान बुद्धि (पाता) रहता है। नये–2 चित्र निकलते रहते हैं। बच्चे कहते हैं सभी चित्र ट्रांसलाइट के रखो भभका होता है।

खर्चा का हर्ज़ा नही है; क्योंकि बच्चों की वृद्धि होती रहती है। उसमें भी ग़रीब, साधारण, साहूकार सभी आ... शिवबाबा का भण्डारा रहता है। जो भण्डारा भरते हैं उनको वहां करोड़ों मिल जाता है। तब तो बाप (कहते हैं) मीठे–2 बच्चों पदमा पदमपति बनने वाले। सो भी 21 जन्मों के लिए। बाप खुद कहते हैं तुम जगत (के) मालिक बन जावेंगे। 21 पीढ़ी। मैं खुद डायरैक्ट आया हूँ । तुम्हारे तीरी पर बहिस्त ले आया हूँ। जैसे बच्चा (पैदा) होता है और बाप का वसा उनके तीरी पर है ही। बाप कहेंगे यह घर–बार सभी तुम्हारे हैं। यह बे(हद) का बाप भी कहते हैं तुम मेरे बनते हो तो स्वर्ग की बादशाही तुम्हारे लिए है 21 पीढ़ी। क्योंकि तुम (विकारों) पर जीत पाते हो; इसलिए बाप को काल–महाकाल कहते हैं। महाकाल कोई मारने वाला नहीं है। उनकी तो महिमा की जाती है। समझते हैं भगवान ने यमदूत भेज कर .....। ऐसी कोई बात है नहीं। यह सभी है भक्ति मार्ग की बातें। बाप कहते हैं मैं कालों का काल हूँ। पहाड़ी लोग महाकाल को भी बहुत मानते हैं। महाकाल का मन्दिर नहीं बनाते हैं। ऐसे ही झुण्डियां लगा देते हैं। तो बाप बैठ बच(चों) को समझाते हैं। यह भी समझते हो यह तो रङ्गाट बात है। बाप को याद करने से ही जन्म–जन्मांतर के (विकर्म) विनाश होते हैं। तो इसका प्रचार करना चाहिए। कुम्भ के मेले आदि तो बहुत ही लगते हैं। स्नान करने का भी बहुत मह(त्)व बताया है। अभी तुम बच्चों को यह ज्ञान अमृत हर 5000 वर्ष बाद मिलता है। वास्तव (में) इसका अमृत नाम है नहीं। यह तो पढ़ाई है ना। बाकी यह सभी भक्ति मार्ग के नाम हैं। जो बाप बैठ समझाते हैं। अमृत नाम सुन कर चित्रों में पानी आदि दिखाया है। वास्तव में पढ़ाई को अमृत नहीं कहा जा सकता। बाप कहते हैं मैं तुमको राजयोग पढ़ाता हूँ। पढ़ाई से तो ऊँच पद मिलता है। सो भी मैं पढ़ाता ..... भगवान को कोई ऐसा मूँझा हुआ रूप तो नहीं है। यह तो बाप आकर इनमें पढ़ाते हैं। ऐसे नहीं कि प(ढ़ा)कर आप समान भगवान–भगवती बनावेंगे। आप समान आत्माओं को बनाते हैं। खुद ल.ना. थोड़े ही हैं जो आप समान बनावेंगे। आत्मा पढ़ती है। उनको आप समान पवित्र नॉलेजफुल बनाते हैं। ऐसे नहीं कि भग(वान)–भगवती बनाते हैं। उन्होंने कृष्ण को दिखाया है। वह कैसे पढ़ावेंगे। सतयुग में पतित थोड़े ही होते हैं। कृष्ण तो होता ही है सतयुग में। और कब भी कृष्ण को तुम नहीं देखेंगे। ड्रामा में हर एक का पुनर्जन्म का चित्र न्यारा रहता है। कुदरत का ड्रामा है ना। कितना समझने का है; क्योंकि यह बनी बनाई बन रही है बाप भी कहते हैं तुम हू बहू इसी फीचर्स में इसी कपड़े में कल्प–2 तुम ही पढ़ने आवेंगे। हू ब हू रिपीट होता है ना। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा फिर वही लेती है जो कल्प पहले लिया था। ड्रामा में कुछ भी फ़र्क हो नहीं सकता। वह होती है हद की बात। यह है बेहद की बात। सिवाय बेहद के बाप के और को(ई) समझा न सके। इसमें कुछ भी संशय नहीं होना चाहिए। निश्चय बुद्धि हो जाते फिर कोई न कोई संशय आ जाते। संग लग जाता है। ईश्वरीय संग चलता चला तो बेड़ा पार हो जावेगा। संग छोड़ा तो विषय सागर में गिर पड़ेगा। एक तरफ है क्षीर सागर, दूसरे तरफ है विषय सागर। क्षीरसागर को छोड़ा तो विषयसागर में गिर पड़ेंगे। ... ज़हर या अमृत। ज्ञानामृत भी कहते हैं। बाप है ज्ञान का सागर। उनकी महिमा भी है। उनकी जो महिमा है वह ल.ना. को नहीं दे सकते। कृष्ण कोई ज्ञान का सागर थोड़े ही है। बाप है पवित्रता का सागर। भल वह ल.ना. पवित्र बनते हैं; परन्तु हमेशा के लिए थोड़े ही रहते हैं। फिर भी आधा कल्प गिरते तो हैं ना। सन्यासी तो जन्म व जन्म गिरते हैं। उन्हों के लिए तो रावण राज्य ही है। जन्म तो फिर भी विख से ही लेते हैं। पतित तो बनते हैं ना। तो यह सभी बातें कोई मनुष्य मात्र नही जानते। वर्ण (भी) कोई नहीं जानते। बाप कहते हैं मैं अकर सभी की सद्गति करता हूँ। सद्गति दाता मैं एक ही हूँ। तुम सद्गति में जाते हो फिर वहां यह बातें नहीं होती। अभी तुम बच्चे सम्मुख बैठे हो। बड़े स्कूल में। तुम भी शिव बाबा से पढ़ कर टीचर बनते हो ना। मुख्य प्रिन्सिपल है वह। आते भी उनके पास ही हैं। कहते हैं हम

(आ)ते हैं शिवबाबा के पास। अरे वह तो निराकार है। हाँ वह आते हैं इनके तन में; इसलिए कहते हैं बापदादा के पास जाते है। यह बाबा है उनका रथ। जिस पर उनकी सवारी है। उनको रथ, घोड़ा, अश्व भी कहा जाता है। इन पर एक कथा भी है। दक्षप्रजापिता ने यज्ञ रचा था। शास्त्रों में तो अनेक कहानियां लिख दी (हैं)। बाप कहते हैं अभी यह सभी बातें भूल जाओ। शास्त्रों में बहुत ही कचड़ा लिखा हुआ है। सबसे जास्ती कचड़े की बात लिखी हुई है कण–कण में, ठिक्कर–भित्तर में परमात्मा है। ऐसी बातें कब न सुनो। बोलो (भ)गवान ने कहा है हियर नो ईविल। तुम भगवान की बैठ ग्लानी करते हो। अपन से भी उनको नीचे गिरा (दि)या है। अजामिल जैसे पापात्माओं ने भगवान को अपने से भी नीचे गिरा दिया है। बोलो हम यह नहीं (सुन) सकते हैं। शिवबाबा की इतनी ग्लानी। जो सर्व का सद्गति दाता, उनको ठिक्कर–भित्तर में डाल दिया (है)! इन जैसा महान पापात्मा कोई होता नहीं। शिव भगवानुवाच कह दो। भगवान भी कहते हैं, मैं आता जब–जब भारत में अति धर्म की ग्लानी होती है। गीता वादी भल कहते हैं यदा यदा हि ..... ; परन्तु अर्थ नहीं समझते। भगवान की ग्लानी क्या होती है कुछ भी समझते नहीं हैं। कितना पत्थर बुद्धि हैं। यह भी (स)मझते हो तुम्हारा बहुत ही छोटा झाड़ है। उनको तूफान आ लगते हैं। नया झाड़ है ना। फाउन्डेशन तो ... यह। इतने सभी अनेक धर्मों के बीच में एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म का सैम्पलिंग लगाते हैं। (कि)तनी मेहनत है। औरों को मेहनत नहीं लगती। वह तो ऊपर से आते रहते हैं। यहां तो जो सतयुग त्रेता में (आ)ने वाले हैं उन्हों की ही आत्माएं बैठ पढ़ती हैं। जो पतित हैं उन्हों को पावन बनाने लिए ही बैठ .... हैं। गीता तो यह भी बहुत पढ़ते थे। तुम बच्चों में ऐसा कोई नहीं होगा। सबसे जास्ती गीता (बा)बा ने पढ़ी है। ट्रेन में जाता था तो भी गीता पढ़ता था। जैसे अभी आत्माओं को याद कर दृष्टि देते हैं तो पाप कट जाये। भक्ति मार्ग में फिर गीता के आगे जल रख बैठ पढ़ते हैं समझते हैं (ह)ज़ारों का उद्धार होगा; इसलिए पितरों को बैठ याद करते हैं। अभी तो बाप ने प्रवेश किया तो उस गीता (को) ही छोड़ दिया। अरे यह तो झूठी गीता है। भक्ति में तो गीता का बहुत मान रखता था। चंदन आ(ये) (ल)गाते थे। बाबा कोई कम भक्त नहीं था। रामायण आदि भी पढ़ते थे। अक्सर करके ब(ड़े) लोग आते थे। जो (ब)ड़ा था सुनाने वाला उसकी तबियत ठीक नहीं होती थी तो हमको कहते थे तुम बैठ पढ़ो। बहुत खुशी (हो)ती थी। अभी तो वह सभी पास्ट हो गया। बाप कहते हैं बीती को चितवो नहीं। यह शास्त्र आदि की ढेर पढ़ी। अभी बाबा ने कहा है यह भूसा निकाल दो। यह जो भी तुम्हारे गुरू आदि हैं उन सभी को भगाओ। इन साधुओं आदि (का) भी उ(द्ध)ार मुझे (क)रना है। तो वह फिर तेरा उद्धार कैसे होगा? बाप ने स्थापना, विनाश और राजधानी का सा. कराया तो वह पक्का हो गया। यह सभी खलास होना है। कब यह थोड़े ही .... था। बाबा ने कहा अभी यह सभी होगा। देरी थोड़े ही है। हम फलाना राजा बनूँगा। यह होगा पता नहीं .... था। यह तो तुम बच्चे जानते हो बाबा की प्रवेशता कैसे हुई। यह बातें तो मनुष्य नहीं जानते। त्रिमूर्ति, ब्रह्मा, विष्णु ,शंकर का नाम तो ले लेते हैं; परन्तु इन तीनों में से भगवान किसमें प्रवेश करेंगे यह थोड़े जानते हैं। वह लोग तो विष्णु के नाम लेते हैं। विष्णु तो है देवता। वह कोई मनुष्य थोड़े (ही) है जो पढ़ावेंगे। शंकर को दिखाते हैं विनाशकारी। बाकी कौन पढ़ावेंगे। बाप कहते हैं मैं अ(ाकर) इनमें (प्रवेश) करता हूँ; इसलिए दिखाया है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। वह पालना और वह विनाश। इसमें बुद्धि से सम(झ)ने की बातें हैं। भगवानुवाच, में तुमको राजयोग सिखाता हूँ। वह भगवान कब आया जो राजयोग सिखाया और (राजाई) पद दिलाया, यह अभी तुम समझते हो। 84 जन्मों का राज़ भी समझाया। पूज्य, पुजारी का भी अर्थ समझाया। विश्व में शान्ति का राज्य यह (ल.ना.) था ना। जो भारतवासी अथवा सारी दुनियां चाहती है। विश्व में .... राज्य था। तो ज़रूर बाकी सभी शान्तिधाम में थे। बाकी सभी धर्म शान्तिधाम में रहते हैं। अभी हम

श्रीमत पर यह कार्य कर रहे हैं। अनेक बार किया है और करते रहेंगे। यह तो बाप जानते हैं कोटों में कौऊ निकलेंगे। इस देवी–देवता धर्म वालों को ही टच होगा। भारत की ही बात है। जो इस कुल के होंगे। व(ह) निकल रहे हैं। निकलते रहेंगे। जैसे तुम निकले हो वैसे और भी प्रजा आदि बनते रहेंगे। जो अच्छा पढ़ते हैं वह पद भी अच्छा पाते हैं। बाबा पूछते हैं, विजय माला में या प्रजा माला में जाना है? माला तो सभी की बनती है। प्रजा की भी माला है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आवेंगे। ऐसे भी नहीं ढेर के ढेर इकट्ठे आ जा(वें) इनमें तो साहूकार, साधारण, ग़रीब आदि सभी हैं ना। राजधानी में तो राजा–रानी, साहूकार, प्रजा, साधारण आदि सभी होते हैं। जो पूछते हो क्या बनने चाहते हो। मुख्य है ही ज्ञान और योग की बात। योग बि(गर) ज्ञान कैसे मिलेगा? बैटरी के साथ योग ज़रूर चाहिए। योग है मुख्य। योग से ही विकर्म विनाश होते हैं। मूल (बात) है यह; इसलिए बाप कहते हैं याद रखते रहो। बाकी पढ़ाई तो सहज है। बाकी.... .. हेल्दी बड़ी आयु इ(स) योग से बनेंगे। विकर्म विनाश होंगे। तब ही पास विद ऑनर होंगे। नहीं तो मोचरा खाकर कर मानी खा लेंगे। जो मोचरा नहीं खावेंगे तो बहुत मानी मिलेगी। आनरएबुल हो गया ना। राम ने भी मोचरा खाया होगा। पढ़े आगे अनपढ़े ज़रूर भरी ढोते हैं। तो बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चे एक ... मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। और को(ई) उपाय है नहीं। तुम ही सोचो कोई उपाय है? यह योग ही अग्नि है जिससे पाप भस्म होते हैं। बाकी गंगा सागर का स्नान तो बहुत किया। सागर में भी बहुत एक्सीडेन्ट हो जाते हैं। इनोसेन्ट कोई बीच में आ जाते हैं तो झट लहर ले जाती है फिर घटके खाने लग पड़ते हैं। बाबा का अनुभव है। पांव खिसक गया तो खलास। इसमें भी कितने का पैर खिसक जाता है। तो गटर में जाकर डूबते हैं। बाबा की शुरू में बहुत कड़ी मुरली चलती थी कि काम महाशत्रु है इन पर जीत पाना है। जैसे यह गटर साफ करने वाले माथा (मूड़ा)कर जाते हैं अन्दर। तुमको भी यह चाहिए तो माथा मुड़ाकर गटर में घुस जाओ। बाबा साफ कह देते (हैं)। डॉग इन दी मेंजर क्यों बनते। न खुद अमृत पीते हो न पीने देते हो। बाबा कुछ भी कहते थे, कोई बिगड़ते नहीं (थे) बाबा की मुरली पर कोई को गु(स्)सा गलता नहीं था। यह भी मिसाल देता था रीढ़ क्या जाने ... को? जिसकी बोली में, सा(सु)र मण्डल के साज़ (क)ो साण्डे क्या समझें? कभी कोई बिगड़ता नहीं था। सभी बिगड़े इस विकार की बात पर। यह भी ड्रामा की भावी कहेंगे। फिर भी ऐसे ही होगा। यह भी लिखा हुआ है लाखा भवन को आग लगाई। यह सभी तुमने देखा। घासलेट आदि ले आये थे। फिर पुलिस आदि को लाना पड़ा। बाबा नहीं था उस समय। बाबा रात को निकल जाते थे। जैसे तुम भागे। किसको भी पता नहीं पड़ा। बाब(ा) भी चला जाता था। किसको पता नहीं पड़ता था। यह सभी ड्रामा में नूँध थी। ड्रामा बड़ा ताकत वाला था। मनुष्य में क्या ताकत। आगे चलकर तुमको सभी सा. होंगे। घर में नज़दीक आते जावेंगे। सैम्पुल देखेंगे। ऐसे थोड़े ही सभी का देखेंगे; इसलिए बाबा कहते हैं भूलो नहीं। यहां जैसे योग में बैठे हो बाहर जाने से बात ही न्यारी हो जाती है। सारा दिन गोरख धंधे में लग जाते हैं। यहां आते हो विश्राम पाने। रिफ्रेश होने। सात रोज़ भट्ठी में बैठ फिर जाओ फिर दो तीन महिने बाद आओ रिफ्रेश होकर जाओ तो अवस्था अच्छी रहेगी। अच्छा मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडनाइट। नमस्ते। याद की यात्रा के क्लास बाद बेहद के बाप के बेहद में खड़े हुए अनमोल महावाक्यः– बच्चे क्या कर रहे, किस प्रकार का पुरुषार्थ कर रहे हो? वानप्रस्थ जाने का? सभी ..... अपने घर वापस जाना चाहते हैं? क्या याद है कि(धर) जाना है? यह (भी) याद आता है कि शान्तिधाम जाना है? सुखधाम जाना है? ... दुनियां का सभी कुछ भूल .....? पुरानी दुनियां से दिल तो नहीं लगती है ? बच्चों को इतनी खुशी होती है? अथाह खुशी होती है कि हम अपने घर जावेंगे? विश्व का मालिक बनेंगे? अर्थ समझते हो निर्माणधाम जाने का? बच्चे अपना (पार्ट) देखते हैं? कौन पूछ रहे हैं? कौन सुनती है? बच्चों को शान्तिधाम और सुखधाम ही याद आता है? (और पीछे भेजेंगे।)